PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 7, ISSUE 6

‘आत्महत्या’ आधुनिक युग की सामाजिक समस्या के रुप में

डॉ. ठक्कर हर्षदकुमार आर.

असिस्टंट प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

सी यु शाह आर्टस् कॉलेज अहमदाबाद

गुजरात भारत

प्रस्तावनाः

समाज से सम्बन्धित अनेक गम्भीर समस्याएँ हैं उनमें से एक समस्या आत्महत्या है । आत्महत्या स्वयं के द्वारा स्वयं को जानबूझ कर नष्ट करने की क्रिया है । सर्वप्रथम दुर्खीम ने आत्महत्या की समाजशास्त्रीय परिभाषा, व्याख्या, प्रकार, कारण आदि की विवेचना की थी । आपकी मान्यता है कि आत्महत्या की वैज्ञानिक एवं वास्तविक व्याख्या वैयक्तिक जैविक कारणों जैसे-वंशानुक्रमण, निर्धनता, प्रेम में असफलता, निराशा, मानसिक कारण आदि के आधार पर नहीं की जा सकती हैं क्योंकि आत्महत्या एक सामाजिक घटना है इसलिए इसके कारकों की खोज भी समाज में ही की जानी चाहिए। मनुष्य से अधिक शक्तिशाली शक्ति जो स्वंय मनुष्य के लिए उपयोगी और लाभदायक है और नैतिक आधार पर मनुष्य को अनुशासित भी करती है, वह केवल समाज है। समाज व्यक्ति का प्रेरणा – स्त्रोत है अतः जब कोई व्यक्ति आत्महत्या करने के लिए विवश होता है तो स समय भी समाज ही दुःखी व्यक्ति की चेतना में उपस्थित रहता है। यह समाज है जो व्यक्ति की एकाकी क्रिया को संचालित एवं नियंत्रित करता है। समाज मं कुछ ऐसी शक्तियाँ हैं जो व्यक्ति को आत्महत्या के लिए प्रेरित करती हैं । वैज्ञानिक अनुसन्धान की व्यावहारिक उपयोगिता को महत्त्वपूर्ण मानते हैं और आत्महत्या व अन्य वैयक्तिक कारणों की उत्पत्ति की सामाजिक जीवन की परिस्थितियों में मानते हैं और उनका उपचार भी सामाजिक जीवन में ही सम्भव मानते हैं। यहाँ आत्महत्या की परिभाषा, विशेषताएँ, कारण, प्रकार आदि की विवेचना करेंगे।

आत्महत्या की परिभाषा एवं अर्थः (Definition and Meaning of Suicide)

दुर्खीम ने अनपी कृति आत्महत्या (सुसाइड) में आत्महत्या को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है - “आत्महत्या” शब्द मृत्यु की उन समस्त घटनाओं के लिये प्रयुक्त किया जाता हैं, जो स्वयं मरने वाले की सकारात्मक अथवा नकारात्मक क्रिया का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष परिणाम होती है, जिसके भावी परिणाम

को वह (मरने वाला व्यक्ति) जानता है ।" इस परिभाषा के आधार पर आत्महत्या से सम्बन्धित कुछ विशेषताएँ उभर कर आती हैं जो निम्नलिखित हो सकती हैं –

आत्महत्या की विशेषताएः

(1) क्रिया का परिणाम (Characteristics of Suicide)- ऐसी मृत्यु को ही आत्महत्या की श्रेणी में रखा जायेगा जो मरने वाले व्यक्ति की क्रिया का परिणाम होती है । अर्थात् क्रिया और परिणाम में कार्यकारण सम्बन्ध होता है भले ही यह सम्बन्ध प्रत्यक्ष हो अथवा अप्रत्यक्ष । क्रिया-सकारात्मक भी हो सकती है और नकारात्मक भ हो सकती है ।

(2) सकारात्मक और नकारात्मक क्रिया (Positive and Negative Action)– सकारात्मक क्रिया से तात्पर्य इस प्रकार के कार्य से होता है, जो स्पष्ट रूप से मृत्यु का कारण हो, जबकि नकारात्मक क्रिया में मृत्यु काकारण अस्पष्ट रहता है । उदाहरणार्थ – यदि कोई देशभक्त दुश्मन के हाथों में जाने के पूर्व स्वयं आत्महत्या कर लेता है अथवा कुण्ठित व्यक्ति जीवन से निराश होकर आत्महत्या कर लेता है । प्रथम आत्महत्या के उदाहरण में कारण स्पष्ट है, जबकि दूसरे में मृत्यु का कारण अस्पष्ट है । दूसरे शब्दों में, प्रथम में क्रिया सकारात्मक है और दूसरे में क्रिया नकारात्मक है ।

(3) तार्किक क्रिया (Logical Action) - आत्महत्या की क विशेषता यह है कि यह तार्किक क्रिया है अर्थात् व्यक्ति आत्महत्या सोच-समझकर व इच्छापूर्वक करता है और अपनी क्रिया के परिणाम को भी जानता है । उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति डूबने की इच्छआ से पानी में गिरता है तो यह आत्महत्या का उदाहरण है किन्तु वह व्यक्ति अनजाने या धोखे से पानी में गिरकर डूब जाता है तो यह दुर्खीम के मत में आत्महत्या नहीं है । कहने का आशय यह है कि वही मृत्यु आत्महत्या की श्रेणी में आयेगी, जिसमें व्यक्ति क्रिया के परिणाम को जानते हुए भी आत्महत्या करता है । इसी कारण दुर्खीम ने बलिदानों को भी आत्महत्या में सम्मिलित किया है ।

(4) क्रिया के परिणाम से अवगत (Acquainted with Consequences of Action) – आत्महत्या की एक विशेषता यह है कि यदि व्यक्ति अपनी क्रिया के विषय में पहले से ही अवगत है और उसके उपरान्त भी वह अपने कार्यो को यथावत करता रहता है तो यह भी आत्महत्या ही कहलायेगी । अर्थात् यदि व्यक्ति किसी क्रिया के परिणाम के विषय में पहले ही जानता है और फिर भी वह उसी घातक क्रिया को करता रहता है तो यह आत्महत्या ही है । उदाहरणार्थ – दुर्खीम के मत में यदि कोई विद्वान अपने अध्ययन के प्रति अत्यदिक सचेष्ट रहने के कारण अपने भोजन की उपेक्षा करता है और अति-परिश्रम के कारण मृत्यु को प्राप्त हो जाता है तो यह भी आत्महत्या ही है क्योंक अत्यदिक परिश्रम एवं भोजन की उपेक्षा ने उसे इतना अधिक थका दिया कि वह जीवित न रह सका और उसकी मृत्यु हो गई ।

(5) सामाजिक तथ्य (Social Fact) – आत्महत्या की एक विशेषता यह है कि आत्महत्या एक सामाजिक तथ्य है । दुर्खीम का मानना है कि आत्महत्या व्यक्तिगत-मनोवैज्ञानिक नहीं है,

> अपितु यह एक ऐसा तथ्य है, जो अनपा स्वतन्त्र अस्तित्व रखता है और जिसकी पृथक प्रकृति है जो सामाजिक है । यह कोई व्यक्तिगत अथवा अचानक होने वाली घटना नहीं है । इसका उदाहरण देते हुए दुर्खीम की मान्यता है कि समाजों में होनेवाली आत्महत्याओं की वार्षिक दर मे कोई विशेष परिवर्तन नही होता है । यह तो समाज की दशाओं से सम्बन्धित है । यह व्यक्तियों की आकस्मिक क्रियाओं से सम्बन्धित नहीं है, बल्कि देश के राष्ट्रीय स्वभाव से सम्बन्धित है ।

दुर्खीम ने आत्महत्या के अन्तर्गत उन्हीं तथ्यों को स्वीकार किया है जिनके कोई सामाजिक परिणाम अवश्य होते हैं । व्यक्तिगत दशाएँ भी भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को आत्महत्या के लिए प्रेरित कर सकती हैं किन्तु ये किसी बड़े समूह में आत्महत्या की प्रवृत्ति को जन्म नही देती अर्थात् उनके कोई सामाजिक परिणाम नहीं होते हैं । अतः उन्हें मनोविज्ञान से सम्बन्धित माना जायेगा, समाजशास्त्र से उनका सम्बन्ध नहीं है । किन्तु जब आत्महत्या के कारण समूह को प्रभावित करते हैं तभी उनका अध्ययन समाजशास्त्र से सम्बन्धित होता है और समाजशास्त्रियों को इसका अध्ययन करना चाहिए ।

मनोजैविकीय कारक (Psybiligical Factors)

मनोविकृत अवस्थाए और आत्महत्या (Psychopathic States and Suicide) :

दुर्खीम के मत में 'मनोविकृत अवस्ताएँ' आत्महत्या के असामाजिक कारक हैं क्योंकि आत्महत्या को प्रायः मनोवैज्ञानिक एवं जैविकीय कारकों के आधार पर ही देखा जाता है किन्तु कुछ विद्वानों के मत में 'प्राकृति पर्यावरण' भी आत्महत्याओं के लिए उत्तरदायी है । दुर्खीम का मानना है कि सम्भव है कुछ व्यक्तियों की शारीरिक और मानसिक स्थिति प्रत्यक्ष रूप से उन्हें आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करती हो अथवा यह भ हो सकता है कि जलवायु, तापमान आदि पर्यावरण सम्बन्धी तत्व भी अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति को आत्हत्या करने के लिए प्रेरित करते हों, किन्तु दुर्खीम के मत में मनोवैज्ञानिक व प्राकृतिक स्थितियों में आत्महत्या की वास्तविक प्रेक शक्ति नहीं होती । वह प्रेरक शक्ति तो सामाजिक दशाओं में ही होती है । दुर्खीम ने 'मनोजैविकीय' कारकों मं मानसिक विकृतियों और सामान्य जैविकीय कारकों का आत्महत्या के साथ सम्बन्धों को स्थापित करने वाले सिद्धान्तों का विश्लेषण किया है, जो अग्रलिखित है ।

उन्माद और आत्महत्या (Insanity and Suicide) :

दुर्खीम के मत में उन्माद या पागलपन एक बीमारी है । इस रोग की मात्र भिन्न-भिन्न समाजों में भिन्न-भिन्न होती है । उन्माद को मानसिक अलगाव कहा जा सकता है । दुर्खीम ने आत्महत्या को उन्माद का परिणाम मानने वाले विद्वानों के सिद्धान्तों का परीक्षण किया । इनमें दो सिद्धान्त प्रमुख है - (1) एस्क्रिरोल ने कहा है, "आत्महत्या मानसिक अलगाव की सभी विशेषताओं को प्रकट करती हैं । एक व्यक्ति उन्माद की अवस्था में ही आत्महत्या का प्रयास करता है और आत्महत्या करने वाले मानसिक अलगाव के रोगी होते हैं ।" जबकि – (2) वार्डिन ने आत्महत्या को ही विशेष प्रकार का उन्माद कहा है । वार्डिन के अनुसार प्रत्येक आत्महत्या एक उन्माद है और प्रत्येक आत्महत्या करने वाला उन्मादी अथवा पागल है । दुर्खीम ने दोनों का परीक्षण किया है, जो निम्न है –

PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 7, ISSUE 6

आत्महत्या एक उन्माद (Suicide as Insanity) :

दुर्खीम ने वार्डिन के कथन “आत्महत्या एक उन्माद” का परीक्षण करके बताया कि यदि आत्महत्या उन्माद का ही एक स्वरूप है तो यह एक ऐसा विशेष उन्माद है जो केवल एक क्रिया सेही सम्बन्धित है, क्योंकि शेष समस्त क्रियाओं में आत्महत्या करने वाला व्यक्ति सामान्य दिखाई देता है। अन्य समस्त क्रियाओं में सामान्य व्यवहार रखने वाला व्यक्ति यदि किसी एक विशेष क्रिया में असामान्य प्रदर्शित के मत में, “एक-विषयोन्मादी वह रोगी हैं जिसका मस्तिष्क एक को छोड़कर शेष समस्त पक्षों में पूर्णतया स्वस्थ हैं। उसमें स्पष्ट रूप से स्थित केवल एक दोष होता है।” उदाहरण के लिए, सब प्रकार से स्वस्थ दिखाई देने वाला व्यक्ति अपने सबी सामान्य व्यवहारों को करता हुआ यदि चोरी करने में विशेष आनन्द की प्राप्ति करता है और बिना किसी विशेष कारण के चोरी करने में विशेष रूप से प्रवृत्त हो जाता है तो उस व्यक्ति को “एक-विषयोन्मादी” कहा जायेगा। वार्डिन आदि के मत में आत्महत्या भी एक ही विशिष्ट उन्माद है जिसमें व्यक्ति के मन में स्वयं को समाप्त करने की इच्छा जागृत हो जाती है। इस प्रकार “एक-विषयोन्माद” एक ऐसा प्रबल संवेग है जो इतना तीव्र व प्रबल होता है कि किसी विशेष क्षणमें मस्तिष्क इस संवेग के अधीन होकर क्रिया कर देता है। किन्तु दुर्खीम इस मत का खण्डन करते हुए तर्क देते हैं कि “एक - विषयोन्माद” का रोगी अत्यदिक शिथिल और निराश रहता है और उसमें विचार और क्रिया के बीच का सन्मुतलन समाप्त हो जाता है। उस व्यक्ति की सम्पूर्ण बौद्धिकता ही उससे प्रभावित हो जाती है और एक से अधिक संवेग से प्रबावित करते हैं, केवल एक संवेग ही नहीं। स प्रकार एक पक्ष में भी पागलपन या उन्माद तबी दिखाई देता है जब सम्पूर्ण मानसिक जीवन उन्माद से प्रभावित हो। अतः “एक-विषयोन्माद” कोई रोग है ही नहीं इस दृष्टि से आत्महत्या भ “एक-विषयोन्मादी” नहीं हो सकती।

उन्माद के परिणाम के रूप में आत्महत्या (Suicide as a Result of Insanity) -

यह सिद्धान्त उन्माद के परिणाम को आत्महत्या मानता है। इस सिद्धान्त के अनुसार आत्महत्या करने वाले व्यक्ति उन्मादी होते हैं। मानसिक अलगाव आत्महत्या का प्रमुख कारण है। एस्क्विरोल इस मत के समर्थक हैं। दुर्खीम इस सिद्धान्त को भ अस्वीकार करते हैं। उनके मत में कुछ उन्मादी व्यक्तियों के द्वारा आत्महत्या कर लेन के आधार पर ही इसे सामान्य नियम नहीं बनाया जा सकता इसके लिए विशेष अध्ययन व परीक्षण करने आवश्यक हैं। अतः इस मत का भी खण्डन करते हुए दुर्खीम ने पागलपन अथवा उन्माद से सम्बन्धित आत्महत्याओं को निम्नलिखित चार प्रकार का बताया है।

उन्माद से सम्बन्धित आत्महत्याएँ – ये निम्नलिखित चार प्रकार क है –

(1) उन्मत्त आत्महत्या (Hallucination Suicide) – इस प्रकार की आत्महत्या मतिभ्रम अथवा विभ्रांति के कारण होती है। रोगी किसी काल्पनिक भय या अपमान से बचने के लिए आत्महत्या कर लेता है। कभी-कभी व्यक्ति ऐसा अनुभव करता है कि कोई रहस्यात्मक शक्ति या मायावी शक्ति उसे मरने की आज्ञा दे रहीहै और आदेश के पालनार्थ वह आत्महत्या कर लेता है। वास्तव में इस प्रकार की आत्महत्या उन्माद के रोग के कारण होती है। विभिन्न प्रकार की भावनाएँ रोगी के मस्तिष्क को प्रभावित करत रहती हैं। इसी विचार श्रृंखला में आत्महत्या का

विचार भी आता है, यदि आत्महत्या काविचार एक बार में सफल नहीं हो पाता तो व्यक्ति पुनः उस विचार को ही त्यागदेता है । इस प्रकार उन्माद की स्थिति में की जाने वाली आत्महत्या उन्माद का ही परिणाम है । वार्डिन ने एक व्यक्ति के विषय में बताया है कि वह उसी रोग के वशीभूत होकर आत्महत्या करने के लिए पानी में उतरा – पानी कम होने के कारण गहरे पानी की खोज करने लगा । तभ एक कस्टम अधिकारी ने उसे तुरन्त नदी से बाहर आने की धमकी दी अन्यथा वह उसे गोली मार देगा । बस, वह व्यक्ति तुरन्त बाहर निकला और उसने आत्महत्या का विचार ही त्याग दिया । विचार-परिवर्तन का यह बड़ा सटीक दृष्टांत है ।

(2) अवसादपूर्ण आत्महत्या (Melancholy Sucide) – अत्यधिक निराश, शोक अथवा दुःख इस प्रकार की आत्महत्या का कारण होता है । रोगी स्वयं को सबसे अलग समझने लगता है, जीवन अन्धकारपूर्ण लगात है, किसी प्रकार की खुशी उसे प्रभावित नहीं करती । मन मैं बड़ा कष्ट अनुभव होता है – इस प्रकार के लक्षण वाले व्यक्ति बड़ी चतुराई से, शान्ति व विचारपूर्वक आत्महत्या करते हैं – आत्महत्या करने में शीघ्रता नहीं करते । इनका रोग स्ताई होता है । दुर्खीम ने फेलेट द्वारा प्रस्तुत एक लड़की का उदाहरण दिया है जो चौदह वर्ष तक अपने गाँव में रहने के बाद पढ़ने गई । वह वहाँ पर बड़ी उदास व खिन्न रहने लगी और मरने की इच्छा से नदी में डूबने को चल दी – किन्तु “आत्महत्या एक अपराध है ।” यह पता लगने के बाद वह रुक गई और पुनः एक वर्ष बाद उसने आत्महत्या करने के कई प्रयास किए ।

(3) सम्मोहित अथवा बाध्यता-मनोग्रस्ति आत्महत्या (Obsessive Suicide) - इस प्रकार की आत्महत्या में रोगी के मन पर हर समय आत्महत्या का विचार छाया रहता है । मृत्यु की इच्छआ से उसका मस्तिष्क सम्मोहित रहता है । मरने का कोई कारण सम्मुख न होने पर भी मरने की इच्छा व्यक्ति को प्रेरित करती रहती है । वह इस इच्छा को दबाने की कोशिश भी करता है और अत्यधिक दुःखी रहता है । अन्त में वह आत्महत्या कर लेता है । ब्रियरे डी बिसमाटं ने एक ऐसे रोगी का उदाहरण दिया है जो शारीरिक, मानसिक व पारस्परिक स्थितियों से प्रसन्न होते हुए भी मृत्यु के विचार से निरन्तर ग्रसित रहता था ।

(4) आवेगपूर्ण अथवा स्वचालित आत्महत्या (Impulsive or Automatic Suicide) - इस प्रकार की आत्महत्या का कोई वास्तविक अथवा काल्पनिक कारण नहीं होता है । इसमें मृत्यु का विचार अचानक एक आवेग के रूप में रोगी के मन में उत्पन्न हो जाता है और इस इच्छआ की पूर्ति के लिए तुरन्त ही वह आत्महत्या कर लेता है । यह सब कुछ ही पलों में घट जाता है । किसी कब्र के समीप से गुजरने पर, तलवार या चाकू आदि को देखने पर अचानक ही व्यक्ति आत्महत्या की तीव्र इच्छआ कर लेता है र आत्महत्या कर भी लेता हैं ।

उपर्युक्त चारों प्रकार की आत्महत्याएँ बिना किसी वास्तविक प्रेरणा के होती हैं । दुर्खीम का मानना है कि अनेकों आत्महत्याएँ इस प्रकार की होती है जो उपर्युक्त में से किसी प्रकार मं सम्मिलित नहीं होती । अधिकांश आत्महत्या के साथ वास्तविक प्रेरणाओं का सम्बन्ध होता है । अतः उन्माद ही आत्महत्या का एकमात्र कारण नहीं माना जा सकता ।

(2) स्नायुदोष और आत्महत्या (Neurasthania and Suicide) :

स्नायुदोष अथवा नाड़ी-दौर्बल्य भी एक मानसिक रोग हैं। इसकी विशेषता यह होती है कि इसमें व्यक्ति न तो पूर्णतया मनोविकृत होता है और न ही पूर्णतया सन्तुलित। दुर्खीम इसे उन्माद का प्रारम्भिक स्वरूप कहते हैं जिसमें सामान्य-सी घटनाओं पर ही रोगी उत्तेजित हो उठता है। सामान्य-सी बात पर अत्यधिक कष्ट का अनुभव करना तथा सामान्य घटना को अति आनन्ददायी मानना अर्थात् हर्ष और विषाद की अस्थिर उत्तेजनाएँ व्यक्ति के मानसिक सन्तुलन को विकृत कर देती है और रोगी अपने जीवन में बड़ी परेशानी का अनुभव करता है, अन्त में परेशान होकर आत्महत्या कर लेता है।

उन्माद और स्नायुदोष के सिद्धान्तों की आलोचना (Criticism of the theories of Insanity and Neurasthania) - दुर्खीम ने स्नायुदोष को आत्महत्या का मूल कारण नहीं माना है। उनके मत में स्नायुरोग आत्महत्या का कारण तभी बन सकता है, जब सामाजिक परिस्थितियों उसमें विशेष रूप से सहायक रही हों। दुर्खीम के मत में आत्महत्या की घनटाओं, स्नायुदोष या मनोविकृति के रोगियों की संख्या के अनुपात में यदि समानता पाई जाए तभी मनोविकृति का आत्महत्या का कारण माना जा सकता है। सात ही सामाजिक पिरस्थितियों के अभाव में भी मनोविकृति की संख्या के अनुरूप आत्महत्या की दर घटती अथवा बढ़ती रहती है। तभी इन दोनों में सह-सम्बन्ध माना जा सकता है, किन्तु वास्तविकता इसके विपरीत है। दुर्खीम ने धार्मिक भिन्नता, लैंगिक भिन्नता, आयु भिन्नता और देश-काल व परिस्थित की भिन्नता के आधार पर आँकडे एकत्र करके परीक्षण किया है और यह सिद्ध किया है कि आत्महत्या और उन्माद अथवा स्नायुदोष में कोई कार्य-कारण सम्बन्ध नहीं है। दुर्खीम के मत में उन्मादी दोष से प्रभावित स्त्रियाँ अधिक होती हैं। काँच और मायर ने भी इस मत की पुष्टि करते हुए बताया है कि ग्यारह देशों के अध्ययन के आधार पर 1000 पुरुषों में 1.18 एवं 1000 स्त्रियों में 1.30 व्यक्ति उन्मादी अथवा स्नायूदोष से पीडित रहेत हैं, किन्तु दुर्खीम ने 12 देशों के आँकडे एकत्र करके प्रमाणित किया है कि आत्महत्या प्रमुखतया पुरुषो की क्रिया है। स्त्रियों और पुरुषों में आत्महत्या का अनुपात 1:4 है। निष्कर्ष निकलता है कि उन्माद अथवा स्नायुदोष आत्महत्या का मुख्य कारण नहीं है। दुर्खीम के मतानुसार, "स्नायुदोष स्वयं में एक बहुत सामान्य मनोभूमि है, जो किसी विशेष क्रिया को जन्म नहीं देती है, वरन् परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न स्वरूपों में प्रकट हो सकती है।"

(3) मध्यपान और आत्महत्या (Alcoholism and Suicide) :

कुछ विद्वानों द्वारा मद्यपान को आत्महत्या का कारण माना गया है, परन्तु दुर्खीम ने मद्यापन के अपराधियों की संख्या औ आत्महत्या की व्याख्या का तुलनात्मक अध्ययन करके स्पष्ट किया है कि मद्यपान और आत्महत्या में कोई गुण-सम्बन्ध नहीं है। दुर्खीम ने जर्मनी और फ्रांस में इस प्रकार के अध्ययन किए हैं। उसने पोजेन नामक प्रान्त का भी अध्ययन किया और बताया कि वहाँ सबसे कम आत्महत्याएँ होती हैं, जबकि सर्वाधिक शराब पीने का वहाँ प्रचलन है। जर्मनी के दक्षिण प्रान्त में लोग सबसे कम शराब पीते हैं, और आत्महत्या की दर भ वहाँ कम है। अतः आत्महत्या का कारण मद्यपान नहीं माना जा सकता।

आलोचना (Criticism) :

दुर्खीम के विचार में आत्महत्या की व्याख्या मद्यपान की मनोविकृति के परिणामस्वरूप नहीं की जा सकती। न तो आत्महत्या स्वयं उन्माद का स्वरूप है और नही मद्यपान की मनोवृत्ति आत्महत्या के लिए उत्तरदायी है। यद्यपि यह सम्भव है कि मद्यपान से उन्मत्त हो सकेगा किन्तु केवल मद्यपान ही प्रमुख कारण नहीं है। दुर्खीम के मत में, "वास्तव में समान परिस्थितियों में उन्मक्त व्यक्ति स्वस्थ मनुष्य की अपेक्षा आत्महत्या के प्रति अधिक झुकता है, परन्तु ऐसा वह अनिवार्य रूप से अपनी दशा के कारण नहीं करता है। उसकी वह शक्ति अन्य कारकों के प्रभाव के माध्यम से ही क्रियाशील होती है जिनकी खोज की जानी चाहिए।"

संदर्भः

1. कन्या भ्रूणहत्या और महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, प्रकाश निारायण नाटाणी, बुक एनक्लेव, जयपुर ।
2. भारतीय समाज में कार्यशील महिलाएँ, डो. सुलोचना श्रीहरी देशपांडे, श्रुति पब्लिकेशन, जयपुर ।
3. महिलाओं के प्रति घरेलु हिंसा और कन्या भ्रूणहत्या, प्रकाश नारायण नाटाणी, बुक पब्लिकेशन, जयपुर ।
4. www.googlesearch working womans and devlopment